संयुक्तांक

वर्ष 33, अंक 2 जुलाई–दिसम्बर, 2019
वर्ष 34, अंक 1 जनवरी–जून, 2020

उन्मीलन

मानसिक हिन्दस्वराज का वैतालिक दार्शनिक षाण्मासिक

प्रधान–सम्पादक
यशदेव शल्य
मुकुन्द लाठ

सम्पादक
अम्बिकादत्त शर्मा
प्रदीप कुमार खरे

दर्शन प्रतिष्ठान
जयपुर

सौगत प्रामाण्यवाद

अम्बिका दत्त शर्मा

भारतीय दर्शन में प्रामाण्यवाद के प्रश्न पर पहले मीमांसक और बाद में नैयायिकों ने जितनी गम्भीरता से विचार किया है उतनी गहराई से इस प्रकरण पर बौद्ध परम्परा में विचार नहीं हुआ है। इसका एक कारण बौद्ध प्रमाणमीमांसीय चिन्तन पर तत्त्वमीमांसा का वह अधिभार है जिसके चलते उनकी प्रमाणमीमांसा लोकाभिमुख कम और निर्वाणोन्मुखी अधिक रही है। इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि बौद्धों ने इसे व्यवहार को इतना अधिक समर्पित प्रश्न माना कि तत्त्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा की अनुरूपता में इसकी व्याख्या करने की उन्हें आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। बौद्ध परम्परा में तर्कपुंगव दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, धर्मोत्तर, दुर्वेक मिश्र, प्रज्ञाकर गुप्त, मोक्षाकर गुप्त, रत्नाकरशांति, रत्नकीर्ति और ज्ञानश्रीमित्र जैसे एक से बढ़कर एक प्रमाणमीमांसक हुए। इनके प्रभाव में भारतीय प्रमाणमीमांसीय चिन्तन का अभूतपूर्व विकास हुआ है। परन्तु इनके ग्रन्थों में प्रामाण्यवाद की चर्चा प्रसंगप्राप्त रूप से यत्किंचित् ही देखने को मिलती है। जबकि प्रामाण्यवाद को सुगठित रूप में प्रस्तुत करना किसी भी प्रमाणमीमांसा के लिए अपने पुरूषार्थ को प्राप्त करने जैसा होता है। शान्तरक्षित और कमलशील ही केवल इसके अपवाद कहे जा सकते हैं जिन्होंने क्रमशः 'तत्त्वसंग्रह' और 'तत्त्वसंग्रह पंजिका' में प्रामाण्यवाद के सभी विकल्पों पर बौद्ध दृष्टि से विचार किया है।[1] शान्तरक्षित वह पहले व्यक्ति हैं जो बौद्धेतर दर्शनों के प्रामाण्य सम्बन्धी विचारों को पूर्वपक्ष बनाकर उनका भूरिशः खण्डन करते हैं और प्रामाण्यवाद के बौद्धपक्ष को समीक्षित रूप से उद्घाटित भी करते हैं। यहाँ यह भी द्रष्टव्य है कि दिङ्नाग से कमलशील पर्यन्त बौद्ध प्रामाण्यवाद के विकास की लम्बी यात्रा में उसका स्वरूप एकरेखीय नहीं रहा है। जबकि मीमांसक और नैयायिक अपने–अपने स्वतः प्रामाण्यवाद और परतः प्रामाण्यवाद की दृढ़ धारणा से कभी विचलित होते

संयुक्तांक : उन्मीलन – वर्ष 33, अंक 2 एवं वर्ष 34, अंक 1, जुलाई 2019–जून 2020
ISSN-0974-0053
U.G.C. Care List : Arts & Humanities, SI.No. 310